

बढ़ते करज़ से घरेलू बचत पर संकट

प्रलिस के लयि:

[घरेलू उपभोग वयय सर्वेक्षण](#), राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, [सकल घरेलू उत्पाद](#), [उपभोक्ता मूल्य मुद्रासफीति](#), [नीतिआयोग](#), मासकि प्रतति व्यक्तति उपभोक्ता वयय, सी. रंगराजन समति।

मेन्स के लयि:

हाल के घरेलू उपभोग वयय सर्वेक्षण की मुख्य बातें

स्रोत: द हदि

हाल ही में [सकल घरेलू उत्पाद अनुपात के मुकाबले अधिक ऋण लेने के कारण वर्ष 2022-23 के दौरान सकल घरेलू उत्पाद \(Gross Domestic Product - GDP\) अनुपात की तुलना में घरेलू नविल बचत में आई गरावट के मुद्दे पर बहस शुरू हुई है।](#)

- भारत सरकार के **मुख्य आर्थिक सलाहकार (CEA)** ने इसकी व्याख्या **घरेलू बचत की संरचना में बदलाव मात्र** के रूप में की, जहाँ परिवारों को केवल उच्च भौतिक बचत (नविश) के वतितपोषण के लयि अधिक ऋण लेना पड़ता है।
- हालाँकि, कुछ **वशिषज असहमत** हैं और उनका मानना है कि इस प्रवृत्तिके पीछे केवल लोगों की अत्यधिक खर्च करने की आदतें ही नहीं, बल्कि कई बड़े आर्थिक कारण भी हो सकते हैं।

भारत सरकार के मुख्य आर्थिक सलाहकार (CEA):

- ये सरकार को आर्थिक मामलों पर सलाह देते हैं और भारत का केंद्रीय बजट पेश होने से पूर्वसंसद में पेश कयि जाने वाले भारत के **आर्थिक सर्वेक्षण** की तैयारी के लयि ज़िम्मेदार होते हैं।
- CEA भारत सरकार के वतित मंत्रालय के **आर्थिक मामलों के वभाग के आर्थिक प्रभाग** का प्रमुख होता है।
- उसके पास भारत सरकार के **सचवि** का पद होता है।

नोट:

- घरेलू शुद्ध वतितिय बचत:** यह **घरेलू आय के उस भाग** को संदर्भति करता है जो ऋण एवं **वतितिय देनदारियों के बाद** बचता है तथा वतितिय परसंपत्तियों, जैसे बैंक जमा, स्टॉक, बॉण्ड तथा अन्य वतितिय उपकरणों में **नविश** कयि जाता है।
 - यह एक अवधि में परिवारों द्वारा रखी गई **वतितिय संपत्तियों में शुद्ध परिवर्तन** का प्रतनिधित्व करता है।
 - उच्च शुद्ध वतितिय बचत उच्च आर्थिक स्थरिता का संकेत देती है।
- घरेलू बचत और GDP अनुपात:** **घरेलू बचत और GDP का अनुपात** इसकी **शुद्ध वतितिय बचत** एवं GDP अनुपात, **भौतिक बचत** तथा GDP अनुपात व **सोने और आभूषणों** का योग है।
 - गणतीय अभविक्रत रूप में:** घरेलू बचत = शुद्ध वतितिय बचत + भौतिक बचत + (स्वर्ण और आभूषण)।

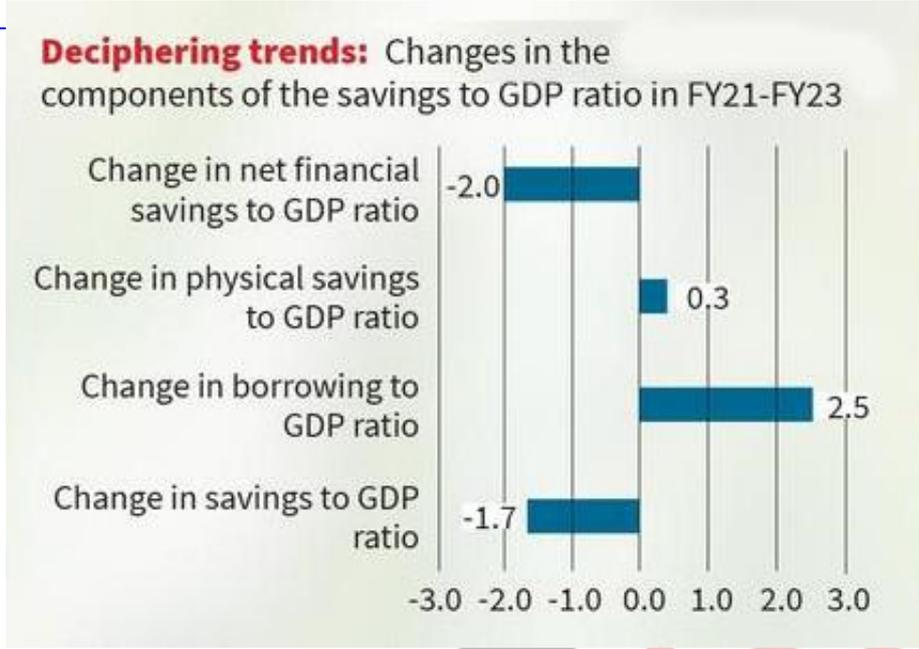
बचत पैटर्न में वर्तमान परिवर्तन क्या हैं?

- बढ़ा हुआ उधार और संपत्ति में स्थरिता:**
 - अधिक उधारी (2.5% तक) होने से **शुद्ध वतितिय बचत (-2.0% तक) कम हो गई है**, लेकिन भौतिक बचत तथा नविश में अधिक वृद्धि (केवल 0.3% तक) नहीं हुई है।
 - यह सरकार के उस **दृष्टिकोण का खंडन** करता है कि अधिक उधार लेने (शुद्ध वतितिय बचत में कमी) के कारण भौतिक बचत में

वृद्धि हुई है।

- घरेलू बचत और सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात में 1.7% अंक की गिरावट आई, जबकि सोने की बचत व सकल घरेलू उत्पाद का अनुपात काफी हद तक अपरिवर्तित रहा।

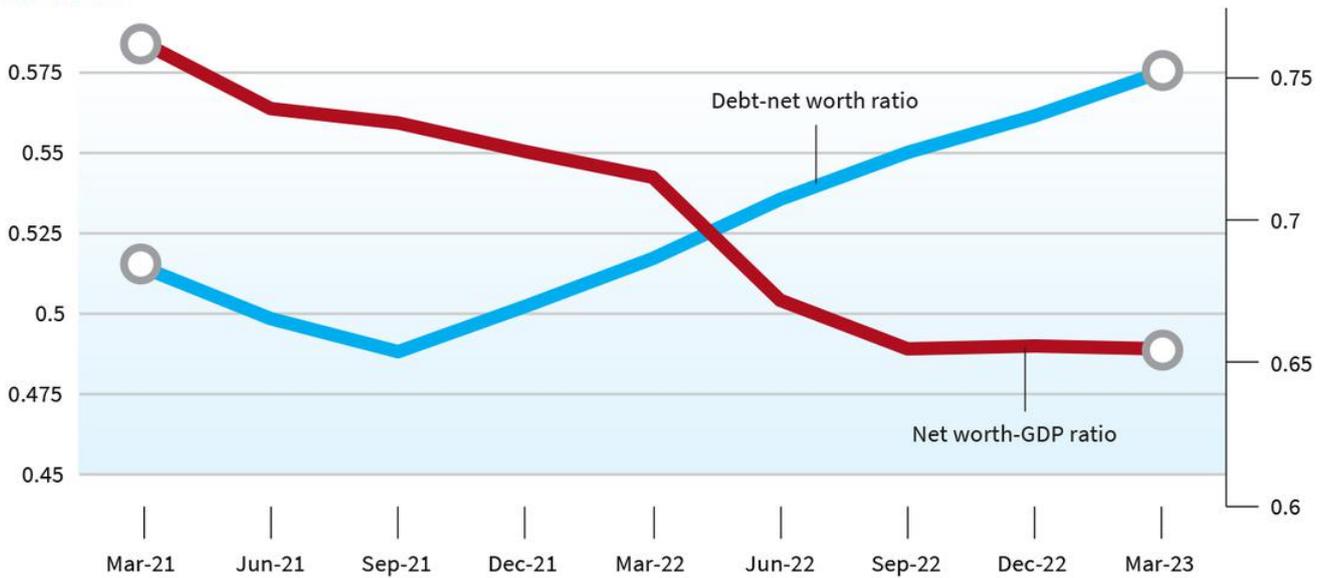
//



- घरेलू वित्तीय संपत्ति और सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात में गिरावट:

- समग्र अर्थव्यवस्था की तुलना में परिवार नरिधन होते जा रहे हैं, साथ ही अधिक धन भी उधार ले रहे हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि घरेलू वित्तीय संपत्ति और सकल घरेलू उत्पाद का अनुपात तेज़ी से कम हुआ है, जबकि ऋण-से-नविल-मूल्य अनुपात बढ़ गया है।

Figure 4: Household net worth GDP ratio and debt-net worth ratio



- ब्याज भुगतान बोझ, किसी नरिधारित ब्याज दर पर, ब्याज दर और ऋण-आय (DTI) के अनुपात का उत्पाद है।

- ब्याज भुगतान बोझ में वृद्धि: ब्याज भुगतान का बोझ किसी नरिधारित ब्याज दर पर, ब्याज दर और ऋण-आय (DTI) के अनुपात का उत्पाद है।

- ऋण-से-आय (Debt-To-Income- DTI) अनुपात एक वित्तीय अनुपात है जो उधारकर्ता के कुल मासिक ऋण की तुलना उनकी कुल मासिक आय से करता है।
 - उच्च ऋण-से-आय अनुपात इंगति करता है कि किसी व्यक्ति को अपने ऋणों पर चूक का जोखिम हो सकता है, जबकि निम्न अनुपात दर्शाता है कि उनके पास अपने ऋण दायित्वों को कवर करने के लिये अधिक पर्योज्य आय (Disposable Income) है।
- हाल की अवधि इन दोनों चर (DTI और ब्याज भुगतान) में तीव्र वृद्धि से संबंधित है।
- परिवारों का ऋण-आय अनुपात दो कारकों के कारण परिवर्तित हो सकता है।
 - उच्च शुद्ध उधार-आय अनुपात, जहाँ कुल उधार और ब्याज भुगतान के बीच का अंतर है।
 - यदि परिवार उच्च नविश या उपभोग के वित्तपोषण को बढ़ाने का निर्णय लेता है।
 - ब्याज दरों में वृद्धि नाममात्र आय (Nominal Income) वृद्धि दर में कमी।
 - यदि ब्याज भुगतान में वृद्धि आय वृद्धि से अधिक है, तो ऋण-आय अनुपात बढ़ता रहेगा। ऐसे तंत्रों को "फिशर डायनेमिक्स" (ब्याज दर और नाममात्र आय वृद्धि दर में परिवर्तन के संदर्भ में बढ़ते ऋण-आय अनुपात की घटना) के रूप में वर्णित किया जा सकता है।
- घरेलू आय वृद्धि उधार दर से पीछे:
 - 2019-20 से 2022-23 की अवधि के लिये घरेलू पर्योज्य आय की वृद्धि दर का औसत मूल्य (2019-20 से 2021-22 में 8% और 2019-20 से 2022-23 में 9.3%) भारति औसत उधार दर (Weighted Average Lending Rate- WALR) (2019-22 में 9.3% और वर्ष 2019-23 में 9.4%) से कम रहा है।
 - इस अवधि के लिये उधार दर का औसत मूल्य भारतीय रज़िर्व बैंक के तमिही आँकड़ों द्वारा तय किया गया है।

Lending rate and the household GDI growth (%)		
	2019-20 to 2021-22	2019-20 to 2022-23
Avg. lending rate (RBI)	9.3	9.4
Average household GDI [^] growth rate	8.0	9.3
Average household GDI growth rate minus Average WALR*	-1.3	-0.1

- 2003-08 और 2019-22 के बीच बचत और नविश में गिरावट:
 - वर्ष 2003-04 से 2007-08 तक औसत सकल राष्ट्रीय आय (Gross National Income- GNI) वृद्धि दर (14.5%) औसत उधार दर (11.5%) से अधिक थी।
 - इसका तात्पर्य यह था कि आय उधार लेने की लागत की तुलना में तेज़ी से बढ़ रही थी।

Lending rate and the GNI growth (%)		
	2003-04 to 2007-08	2019-20 to 2021-22
Average Lending rate (IMF)	11.8	8.8
Average GNI** growth rate	14.5	8.7
Average GNI growth rate minus Avg lending rate	2.7	-0.1

- फिशर डायनेमिक्स 2019-20 से सकरयि है:
 - यह ब्याज दर और नाममात्र आय में परिवर्तन के कारण ऋण-आय अनुपात बढ़ने की घटना है।

- (c) केवल 1 और 3
(d) 1,2 और 3

उत्तर: c

प्रश्न. किसी दिये गए वर्ष में भारत में कुछ राज्यों में आधिकारिक गरीबी रेखाएँ अन्य राज्यों की तुलना में उच्चतर हैं, क्योंकि(2019)

- (a) गरीबी की दर अलग-अलग राज्य में अलग-अलग होती है,
(b) कीमत-स्तर अलग-अलग राज्य में अलग-अलग होता है,
(c) सकल राज्य उत्पाद अलग-अलग राज्य में अलग-अलग होता है,
(d) सार्वजनिक वितरण की गुणता अलग-अलग राज्य में अलग-अलग होती है,

उत्तर: (b)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/rising-debt-strained-household-savings>

